

दंडशास्त्र के ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण

दंडशास्त्र (Penology) की परिभाषा: दंडशास्त्र के ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण अपराधियों के दंड, सुधार, पुनर्वास और उनके सामाजिक पुनः एकीकरण (Reintegration) का अध्ययन करने वाली विधि की एक शाखा है। यह अपराधियों के प्रति समाज और न्याय प्रणाली द्वारा अपनाई गई नीतियों और उनके प्रभावों पर केंद्रित होता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण:

प्राचीन काल से ही अपराधियों को दंडित करने के विभिन्न तरीके अपनाए गए हैं।

1. **प्राचीन दंड प्रणाली:** इसमें कठोर दंड जैसे मृत्युदंड, अंग-विच्छेदन, कोड़े मारना, कारावास आदि शामिल थे।
2. **धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण:** हिंदू, इस्लामिक, ग्रीक, और रोमन कानूनों में नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर अपराधियों को दंडित किया जाता था।
3. **मध्यकालीन काल:** इस समय अपराधियों को सार्वजनिक रूप से दंडित किया जाता था, जिससे समाज में डर पैदा हो।
4. **औपनिवेशिक काल:** ब्रिटिश शासन के दौरान कठोर श्रम, दीर्घकालिक कारावास और निर्वासन (जैसे अंडमान भेजना) जैसी सजा दी जाती थी।

समकालीन दृष्टिकोण:

आधुनिक दंडशास्त्र दंड के बजाय अपराधियों के सुधार और पुनर्वास पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1. **पुनर्वास (Rehabilitation):** अपराधियों को समाज में दोबारा शामिल करने के लिए शिक्षा, मानसिक परामर्श और रोजगार प्रशिक्षण दिया जाता है।
2. **निवारक दृष्टिकोण (Deterrence):** कठोर दंड के माध्यम से अपराधियों और समाज में अपराध करने की प्रवृत्ति को रोका जाता है।
3. **सुधारात्मक दंड (Reformative Punishment):** अपराधियों के व्यक्तिगत सुधार पर ध्यान दिया जाता है ताकि वे पुनः अपराध न करें।
4. **मानवाधिकार और जेल सुधार:** कैदियों के अधिकारों को सुरक्षित करने और जेलों की स्थितियों को सुधारने पर बल दिया जाता है।

निष्कर्ष:

दंडशास्त्र का विकास प्रतिशोधात्मक (Retributive) दृष्टिकोण से सुधारात्मक (Reformative) दृष्टिकोण की ओर हुआ है। आधुनिक युग में अपराधियों को कठोर दंड देने के बजाय उन्हें समाज का उपयोगी सदस्य बनाने का प्रयास किया जाता है।